हिंसा के शिकार : छात्र, शिक्षक और स्कूल

संजीव राय

हिंसा हर समय के लिए एक बड़ी चुनौती रही है। वर्तमान में सांस्कृतिक–सामाजिक और राजनीतिक कारणों से होने वाली हिंसा पूरी दुनिया के लिए एक बड़ी समस्या बनकर उभरी है। प्रस्तुत आलेख में इस चुनौती के एक बिलकुल नए आयाम की पड़ताल की गई है जिसमें हिंसा के दायरे में शैक्षिक संस्थान और विद्यार्थी हैं। हिंसा का रास्ता अपनाने वालों का यह एक नया ट्रेंड है जो दुनिया भर में दिखाई देता है। कहीं समाज की प्रगतिशीलता और आधुनिकता के ख़िलाफ़ तो कहीं राज्य के ख़िलाफ़ आक्रोश के रूप में यह हिंसा स्कूलों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों को अपना आसान निशाना बना रही है। संजीव राय का यह शोधपरक आलेख दुनिया के विभिन्न कोनों में हुई हिंसक घटनाओं के मार्फ़त एक नए मसले की ओर हमारा ध्यान खींचता है। सं.

दुनिया भर में स्कूलों और विश्वविद्यालयों के प्रसार के साथ ही शिक्षण संस्थाओं पर हमले की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। अभी अप्रैल, 2019 के आख़िरी हफ़्ते में ही अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी काबुल के जहान विश्वविद्यालय में हुए बम विस्फोट करने वाला संदिग्ध आतंकी मारा गया।[1]

इसके पहले अगस्त, 2018 में काबुल में यूनिवर्सिटी की प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्रों पर हुए हमले में 48 छात्र मारे गए और 67 घायल हो गए।[2] इसके पहले 2016 में काबुल में ही अमेरिकन यूनिवर्सिटी पर हमला हुआ था, जिसमें 13 छात्र मारे गए थे।[3]

हाल के वर्षों में बांग्लादेश में कुछ विश्वविद्यालयों पर बम फेंके गए और अध्यापकों की हत्या भी की गई है। दुनिया भर में स्कूलों पर हमले की घटनाएँ हो रही हैं और विश्वविद्यालयों को भी निशाना बनाया जा रहा है। दक्षिण एशिया में भूटान को छोड़कर कोई भी देश ऐसा नहीं है जहाँ स्कूलों पर हमले होने की घटनाएँ न हुई हों।

पहले जहाँ सरकारों के विरोध में स्कूल की बिल्डिंग पर हमला होता था, वहीं अब चलते हुए स्कूलों पर हमले होने लगे हैं। वर्ष 2014 में पाकिस्तान के पेशावर में आर्मी स्कूल पर उस समय हमला हुआ था जब स्कूल में कक्षाएँ चल रही थीं। इस हमले में 141 छात्र मारे गए थे और 113 घायल हो गए थे।[4] यह हमला किसी दूसरे देश के लोगों द्वारा नहीं किया गया था और न ही मारे गए बच्चों ने कोई ऐसा गुनाह किया था जिसके कारण उनकी उनके ही स्कूल में हत्या कर दी जाए। लेकिन यह घटना सशस्त्र हिंसा

1. https://www.washingtonpost.com/world/asia_pacific/afghan-official-says-taliban-ambush-police-convoy-kills-9/2019/04/25/328f9482

2. https://www.cbsnews.com/news/afghanistan-kabul-suicide-attack-university-students-shite-neighborhood -isis/

3. https://www.nytimes.com/2016/08/26/world/asia/afghanistan-kabul-american-university.html

4. https://www.bbc.com/news/world-asia-30491435

और शिक्षा के साथ उसके सम्बन्ध की वैचारिक बहस में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ बनी क्योंकि यह हमला स्कूल / कॉलेज / विश्वविद्यालय की इमारत भर पर नहीं था, बल्कि बच्चों को उनके ही स्कूल में गोलियों से मारा जा रहा था। यह स्कूल सेना के अधिकारियों के बच्चों के लिए था। जिन के सेना अधिकारियों की ज़िम्मेदारी दुश्मनों से अपने देश की रक्षा करने की थी उनके अपने ही बच्चे उनके ही देश में सुरक्षित नहीं रहे। यहाँ यह स्पष्ट नहीं है कि इसके पीछे कारण क्या थे?

वर्ष 2014 में ऐसी ही एक दूसरी घटना नाइजीरिया में घटी। 'बोको हराम' नाम के गिरोह ने नाइजीरिया के चिबोक में स्कूल पर हमला करने के बाद 276 लड़कियों का अपहरण कर लिया।[5] कुछ लड़कियाँ मार दी गईं, कुछ जान बचाकर भाग निकलीं, कुछ लड़कियों से ज़बरदस्ती शादी करने की भी ख़बरें आईं और कुछ लड़कियाँ अभी भी ग़ायब हैं। किन्तु यहाँ कारण ज़्यादा स्पष्ट है क्योंकि 'बोको हराम' एक अतिवादी संगठन है जो आधुनिक शिक्षा व्यवस्था का विरोध करता है और लड़कियों के लिए शिक्षा की मुख़ालफ़त करता है।

नेपाल में वर्ष 1996-2006 तक राजशाही को हटाने के लिए नेपाल की माओवादी कम्युनिस्ट पार्टी ने एक 'जनयुद्ध' चलाया। इस 'जनयुद्ध' में 13,000 से अधिक लोग मारे गए। जान गँवाने वालों में शिक्षक भी थे और छात्र भी। एक अनुमान के मुताबिक़ इस दौरान 140 से अधिक शिक्षक मारे गए (राय संजीव, 2018: कनफ्लिक्ट, एजुकेशन एण्ड द पीपल्स वॉर इन नेपाल)। शिक्षकों पर गोली चलाने वालों में रॉयल नेपाल आर्मी / पुलिस भी थी और माओवादी भी। लगभग 500 छात्रों को भी इस जनयुद्ध में अपनी जान गँवानी पड़ी। इन दोनों लड़ने वाले दलों के बीच स्कूल, शिक्षा, शिक्षक और बच्चे सभी आ गए।

भारत में स्कूलों पर हमले

पिछले दो दशकों में देखें तो हमारे देश के छत्तीसगढ़, ओडिशा, बिहार और झारखण्ड जैसे राज्यों में कई स्कूल भी उन इलाकों में चल रहे संघर्ष से प्रभावित होते रहे हैं। यहाँ वर्ष 2018 में कुछ स्कूलों को जलाने की घटनाएँ हुईं। जम्मू-कश्मीर में कुछ स्कूलों को रात के अँधेरे में आग के हवाले कर दिया गया। क्या कारण है कि स्कूल की बन्द खाली इमारत, निहत्थे शिक्षक और छात्र-छात्राएँ कुछ लोगों के लिए डर का सबब बने है। कौन से हित है जो इन सब से डर रहे हैं, स्कूल जाने वाली लड़कियों से डर रहे हैं! एक अनुमानित आँकड़ा बताता है कि वर्ष 2009-2013 के बीच दुनिया के 70 देशों में 9,600 हमले स्कूलों और अन्य शिक्षण संस्थानों में हुए हैं।[6]

पिछले कुछ सालों में शिक्षकों की हत्या और शिक्षण संस्थानों पर हमले की घटनाएँ बढ़ी हैं। वर्ष 2013 से 2017 के बीच 12,700 हमले शिक्षण संस्थानों / छात्रों-शिक्षकों पर हुए हैं जिनसे 21,000 छात्र-शिक्षक प्रभावित हुए हैं। अधिकांश हमले कांगो, दक्षिण सूडान, सीरिया, यमन, इज़राइल, फिलीपींस और नाइजीरिया में हुए हैं (Global Coalition to Protect Education from Attack (GCPEA), 2018)।

स्कूलों पर बमबारी और लड़कियों का डर

हाल के वर्षों में सीरिया में स्कूलों पर हवाई बमबारी की घटनाएँ हुई हैं, यह भी एक नया बदलाव है। सीरिया में वर्ष 2011 में 'गृहयुद्ध' शुरू हुआ। तब से अब तक वहाँ लाखों लोग मारे जा चुके हैं, हज़ारों की संख्या में बच्चे, शिक्षक और उनके परिवार अपनी जान बचाकर शरणार्थी शिविरों में रहने को मज़बूर हैं। लाखों बच्चे स्कूल छोड़ चुके हैं। सीरिया के अध्यापक बता रहे हैं कि हमारे विद्यार्थी अपने पाठ में

5. www.washingtonpost.com/news/worldviews/wp/2016/04/14/boko-haram-kidnapped-276-girls-two-years-ago-what-happened-to-them

6. https://www.bbc.com/news/education-30512451

दी गई जानकारी से ज़्यादा हथियारों के नाम जानते हैं।

दुनिया भर में कई धार्मिक समूह शिक्षा का विरोध कर रहे हैं, लड़कियों को स्कूल जाने से रोकना चाह रहे हैं और इसके लिए लड़कियों को डराने-धमकाने से लेकर स्कूलों को बन्द करने और बम से हमला करने तक के तरीक़े अख़्तियार कर रहे हैं। मलाला युसुफ़ज़ई आज दुनिया में एक जाना-पहचाना नाम है। 12 साल की उम्र में मलाला को पाकिस्तान में गोली मारी गई, क्योंकि कुछ चरमपंथी समूह चाहते थे कि लड़कियाँ स्कूल नहीं जाएँ। लेकिन मलाला लड़कियों के पढ़ने के अधिकार की वकालत कर रही थीं, इसलिए वे चरमपंथियों की गोलियों का शिकार हुईं। कई देशों में स्कूल जाने वाली लड़कियों पर तेज़ाब से हमले हुए, अफ़ग़ानिस्तान और पाकिस्तान में छात्राओं पर परम्परागत पोशाक न पहनने के कारण हमले हुए हैं और जुर्माना लगाने की घटनाएँ भी हुई हैं। इराक़ जो कि वर्ष 1980-1990 के दौरान खाड़ी देशों में सबसे अच्छी शिक्षा व्यवस्था वाला देश रहा, वहाँ वर्ष 2003 से 2008 के बीच 31,000 से ज़्यादा हमले शिक्षण संस्थानों पर हुए (Human Security Report, 2012)।

शिक्षा में हिंसा के तत्त्व

ग्लोबल कॉल फ़ॉर प्रोटेक्टिंग एजुकेशन फ्रॉम अटैक के अनुसार वर्ष 2018 में 74 देश सशस्त्र हिंसा से प्रभावित थे। शिक्षा के अलग-अलग तत्त्व हिंसा के कारण बने हैं। कहीं भाषा तो कहीं पहचान (जैसे– सीरिया, इराक़, म्याँमार आदि में धर्म और जाति), तो कहीं उग्र और नरम विचारधारा के बीच टकराव के कारण हिंसा की ख़बरें मिलती रही हैं। लेकिन हिंसा की जड़ों में आर्थिक और शैक्षिक असमानता एक प्रमुख कारण है। एक लम्बे समय तक चल रहा अन्याय भी उसे भुगत रहे लोगों में हिंसा की भावना भी हिंसा को जन्म देता है।

अब अगर दुनिया भर में शिक्षा धीरे-धीरे मुख्य निशाने पर आ रही है तो इसके कारणों की पड़ताल भी करनी पड़ेगी। जब हमले बिल्डिंग पर ही नहीं, बल्कि छात्रों और शिक्षकों पर भी हो रहे हैं तो हमको यह भी देखना होगा कि शिक्षा के भीतर आख़िर क्या चल रहा है? पाठ्यक्रम की पड़ताल भी करनी होगी। किताबों का मूल्यांकन करना होगा और भाषा नीति की भी समीक्षा करनी होगी।

आर्थिक और शैक्षिक विषमता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। बहिष्कृत लोगों के लिए अगर स्कूल का विकल्प है तो वे स्कूल ही बहिष्कृत प्रतीत होते हैं! आप ख़ुद ही देख लीजिए कि स्कूलों की बिरादरी में गाँव की सरकारी पाठशाला कहाँ खड़ी है? गाँधीजी अपने समय से आगे थे। असमानता, शिक्षा की भाषा, सामाजिक सरोकार और जड़ों से जोड़ने वाली शिक्षा की ज़रूरत, चरित्र निर्माण, सत्य और अहिंसा जैसे पक्षों पर उनका ज़ोर था। आप उनके व्यवहार के किसी भी पक्ष को ले लीजिए आपको वहाँ से अन्तर्दृष्टि मिल जाएगी। हमारा जो दोहरा चरित्र है, वह हिंसा का एक प्रमुख कारण है!

हिंसा के बीच शिक्षक और छात्र

शिक्षकों की स्थिति चिन्ताजनक है। नेपाल, थाईलैंड, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, सीरिया, बांग्लादेश सहित दुनिया के अनेक देशों में शिक्षक हिंसा के शिकार हुए हैं। शिक्षकों का निरपेक्ष रहना मुश्किल होता जा रहा है। नेपाल में जब 'जनयुद्ध' चल रहा था तो बड़ी संख्या में शिक्षकों को अपना गाँव छोड़कर दूसरे स्थानों पर जाना पड़ा था। वहाँ शिक्षकों पर चन्दा देने का दबाव था तो उन्होंने अपनी तनख़्वाह का एक निश्चित हिस्सा 2-3 सालों तक 'चन्दे' के रूप में दिया। उनके पास मना करने का विकल्प नहीं था– 'मरता क्या न करता'! नेपाल में 'जनयुद्ध' के दौरान चन्दा देने से मना करने वाले शिक्षकों का अपहरण से लेकर हत्या तक की गई (राय संजीव, 2018: कनफ्लिक्ट, एजुकेशन एण्ड द पीपल्स वॉर इन नेपाल)। भारत में भी कुछ वर्षों पूर्व तक छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड, ओडिशा, मणिपुर आदि राज्यों के

भीतरी इलाक़ों में शिक्षकों के अपहरण और उनसे चन्दा लेने की घटनाएँ सुनाई देती थीं।

रवाण्डा में जब हुतु और तुत्सी समूहों के बीच 'गृहयुद्ध' चला तो वहाँ आठ लाख लोग मारे गए। रवाण्डा के लगभग 45% स्कूल इन हमलों का शिकार हुए थे (Moshman, 2014; Roberts, 2005)। सोमालिया में 'अल सबाब' नाम का एक गिरोह है। इस गिरोह ने वर्ष 2010 में सोमालिया में हज़ारों छात्रों का अपहरण किया और उनमें से एक हज़ार छात्रों को अपने लड़ाका दस्ते में शामिल किया।[7]

उधर अमेरिका जैसे आधुनिक देश में भी स्कूलों के भीतर छात्रों द्वारा गोलीबारी की घटनाएँ आम हो रही हैं। एक अनुमान के मुताबिक़ अमेरिका में वर्ष 2002 से 2012 के बीच बन्दूक और हिंसक घटनाओं में 28,000 किशोर अपनी जान गँवा बैठे। इनमें अधिकांश बच्चे 15 से 19 वर्ष की उम्र के थे।[8]

तकनीकी विकास और हिंसा

तकनीकी विकास ने भी युद्ध में बच्चों की भूमिका बदली है। विकास का असर हथियारों के उत्पादन पर भी पड़ा है। बाज़ार में सस्ते और हल्के हथियार उपलब्ध हैं। सुगम और कम वज़न के हथियारों ने सशस्त्र संघर्षों में बच्चों को हथियारबन्द दस्ते में शामिल कर दिया है। बच्चों को डराकर, लालच देकर या सपने दिखाकर सशस्त्र दलों में शामिल किया जाता है।[9]

सरकारों के ख़िलाफ़ लड़ने वाले हथियारबन्द गुट पहले बच्चों का इस्तेमाल माल ढोने, खाना बनाने और गुप्तचरी के लिए करते थे लेकिन एके 47, एके 56 और एके 76 जैसे हथियारों के विकास के बाद बच्चे अब अग्रिम पंक्ति के लड़ाके हो गए हैं। 12-14 साल के बच्चे अब एके 47, एके 56 और एके 76 जैसे हथियार आसानी से चला सकते हैं और आत्मघाती दस्ते में शामिल हो जाते हैं। उनको सशस्त्र दलों में रखना आर्थिक रूप से भी किफ़ायती रहता है और उनके विद्रोह करने की सम्भावना भी सीमित ही रहती है। वर्ष 2006 के एक अनुमान के मुताबिक़ उस दौरान लगभग 25,000 बच्चे लड़ाका समूहों और सशस्त्र दलों के साथ सम्बन्धित थे।[10]

ऐसा नहीं है कि सशस्त्र संघर्षों में शामिल सभी लड़के-लड़कियाँ स्कूली शिक्षा से वंचित हों। अकसर उनके कमाण्डर या नेता उच्च शिक्षित होते हैं। हाँ, जब हिंसा और हड़ताल के दौरान स्कूल बहुत दिनों तक बन्द रहते हैं तो छात्रों के स्कूल छोड़ने की सम्भावना बढ़ जाती है। अभिभावक ऐसी असुरक्षा की स्थितियों को भाँपते हुए लड़कियों को सबसे पहले स्कूलों से निकाल लेते हैं। लड़कियों को भी सशस्त्र दलों में शामिल किया जाता है लेकिन उनके बारे में शोध कार्य बहुत कम हुआ है।

वर्ष 2015 में ब्रिटेन में लन्दन के बेथनाल ग्रीन इलाक़े से स्कूली लड़कियों का एक समूह सीरिया चला गया था। ये लड़कियाँ इस्लामिक स्टेट के लड़ाकों से शादी करने के इरादे से सीरिया गई थीं। ये लड़कियाँ इस्लामिक स्टेट के ऑनलाइन रिक्रूटमेण्ट में दिए गए प्रलोभन से आकर्षित होकर वहाँ पहुँचीं। फरवरी 2019 में उन लड़कियों में से एक, शमीमा बेगम की ख़बर मिली कि वह उत्तरी सीरिया के एक शरणार्थी कैम्प में रह रही है और उसने एक बच्चे को जन्म दिया है। अब वह अपने परिवार के पास वापस लौटना चाहती है। लेकिन अभी उसकी वापसी का मामला क़ानूनी पेंच का शिकार है

7. https://www.pri.org/stories/2018-06-19/al-shabab-kidnaps-somali-children-fill-its-ranks-parents-pull-kids-school-or-flee
8. https://gunwars.news21.com/2014/at-least-28000-children-and-teens-were-killed-by-guns-over-an-11-year-period
9. https://yourstory.com/2017/10/girls-women-caught-conflict-zones
10. https://www.un.org/womenwatch/daw/egm/elim-disc-viol-girlchild/ExpertPapers/EP.12%20Mazurana.pdf

(द इण्डियन एक्सप्रेस, फरवरी 18, 2019, नई दिल्ली)।

ऐसे ही इण्डोनेशिया में एक धार्मिक चरमपंथी समूह लगभग 40 प्रतिशत विश्वविद्यालयीन / स्कूली छात्रों के बीच अपनी उग्र विचारधारा पहुँचाने के लिए प्रयास कर रहा है। इस बात की जानकारी होने के बाद वहाँ की इण्टेलिजेंस एजेंसी कुछ स्कूलों और विश्वविद्यालयों पर निगरानी रख रही है।[11]

लेकिन सवाल है कि क्या हथियारों के बल पर उग्र विचारधारा के फैलाव को रोका जा सकता है? आज दुनिया भर में अलग-अलग जातीय और धार्मिक समूहों के अपने-अपने भाषा और धार्मिक मूल्य आधारित स्कूल चल रहे हैं। उनके पाठ्यक्रम में क्या सिखाया जा रहा है? क्या उनके छात्र एक सह-अस्तित्व की भावना से ओतप्रोत होकर निकल रहे हैं या वे अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान की सर्वोच्चता स्थापित करना चाहते हैं? शिक्षा में इन सवालों पर विमर्श की ज़रूरत है।

हिंसा का मूल कारण

अब जब दुनिया में हिंसा का बोलबाला है तो कुछ लोग गाँधीजी के अहिंसा के सिद्धान्त की ओर देख रहे हैं। गाँधीजी ने जीवन भर अलग-अलग स्तरों पर विरोधाभासों को पहचाना और उनको ख़त्म करने की कोशिश भी की। इसीलिए गाँधीजी राजनीतिक संघर्षों के साथ ही सामाजिक बुराइयों के ख़िलाफ़ भी लड़ते रहे और अपने व्यक्तिगत जीवन में सत्य के प्रयोग करते रहे। आज दुनिया भर में कथनी और करनी का भेद बढ़ता जा रहा है एवं एक-दूसरे पर विश्वसनीयता का संकट भी बढ़ा है। सामाजिक मूल्य बदल रहे हैं और बेहतर मनुष्य होने की बजाय कैसे भी सफल हो जाने को महत्त्व दिया जा रहा है।

बढ़ती हिंसा का मूल कारण तलाशना होगा और इसकी जड़ें शिक्षा से कहाँ जुड़ती हैं, यह देखना होगा। यह विमर्श हमारे विश्वविद्यालयों और शिक्षा के केन्द्रों में होना चाहिए कि शिक्षा और शिक्षक आज किन मूल्यों को प्रदर्शित कर रहे हैं। धर्म, भाषा, लिंग की पहचान के बीच एक विश्व नागरिक का निर्माण कैसे होगा? दुनिया भर में स्कूलों की संख्या तो बढ़ी है लेकिन शान्ति की बजाय हिंसा एक सामान्य घटना की तरह जगह बना रही है। स्कूलों का पाठ्यक्रम कैसा है, किताबें कैसी हैं, पड़ोसी देश एक-दूसरे के बारे में अपने छात्रों को क्या पढ़ा रहे हैं, किन मूल्यों को प्रोत्साहित कर रहे हैं, शिक्षक किन गुणों की प्रशंसा कर रहे हैं, इसको भी शिक्षा के विमर्श में लाना होगा।

समाज और दुनिया में शान्ति का पाठ पढ़ाते-पढ़ाते 21वीं सदी में शिक्षा, शिक्षक और शिक्षा संस्थान ख़ुद हिंसा के निशाने पर हैं। आख़िर इसके लिए दोषी कौन है? गाँधीजी के अहिंसा के दर्शन में इन सवालों के कुछ जवाब निहित हैं। गाँधीजी ने असहमतियों को भी अपने दर्शन में समावेशित किया। उनके साथ संवाद के रास्ते हमेशा खुले रखे। आज असहमतियों के बीच संवाद की जगह कम होती जा रही है। हज़ूर और मजूर के बीच का फ़र्क़ आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से बढ़ता जा रहा है। इन फ़ासलों को कम करने से ही विश्व शान्ति का प्रयास सफल हो सकता है लेकिन इसकी शुरुआत शिक्षा में व्याप्त असमानता को ख़त्म करने से ही हो सकती है।

11. https://www.abc.net.au/news/2018-05-08/university-students-in-indonesia-exposed-to-radical-groups/9734874

संजीव राय ने दिल्ली विश्वविद्यालय से पीएचडी की है। आपको शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का 20 वर्षों का अनुभव है। वर्तमान में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज में एडजंक्ट प्राध्यापक व डेल्टा राइट एडवाइज़र्स में निदेशक हैं। शिक्षा एवं नीतियों के विविध विषयों पर नियमित लिखते है।

सम्पर्क : sanj.2402@gmail.com